प्रेस विज्ञप्ति **दिनांक : 16 दिसंबर, 2014**

भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस के प्रवक्ता एवं विधायक श्री रणदीप सिंह सुरजेवाला ने आज मीडिया के सामने यह बयान जारी किया-

मित्रों,

देश के सामने खड़े एक अभूतपूर्व कृषि संकट के कारण समूचे कृषि क्षेत्र ही नहीं बल्कि पूरे भारतवर्ष की खाद्य सुरक्षा पर ही सवालिया निशान लगा दिया है। यह संकट भाजपा के नेतृत्व वाली राजग सरकार की निरंतर उपेक्षा, लापरवाही और क्षमता के अभाव के कारण पैदा हुआ है जिसके कारण केंद्र सरकार को देश के किसानों की पीड़ा, नाराजगी व हाहाकार तक नहीं सुनाई पड़ रहे हैं। संक्षेप में कहें तो मोदी सरकार की कृषि नीति अंग्रेजी के तीन शब्दों - चूना लगाओ (ड्यूप), धोखा दो (डिसीव) और गड्ढे में डालो (डंप) से संचालित है।

देश में कृषि उत्पादों की कीमतें लगातार औंधे मुंह गिर रही हैं। सरकार की इच्छा किसी भी फसल का उचित न्यूनतम समर्थन मूल्य निर्धारित करने की नहीं है। एफसीआई और सीसीआई जैसी सरकारी खरीद एजेंसियां राज्यों के लिए निर्धारित पीडीएस कोटे की सीमा से अधिक फसलें न्यूनतम समर्थन मूल्य पर भी खरीदने से इंकार कर रही हैं। यही नहीं, भाजपा शासित छत्तीसगढ़, मध्य प्रदेश व राजस्थान राज्यों में जीरी और गेहूं पैदा करने वाले किसानों को पहले का घोषित किया गया बोनस भी श्री नरेंद्र मोदी ने रोक दिया है, जो इन राज्यों में चुनाव से पहले बड़ी चुनावी घोषणा थी।

यूरिया, डीएपी व बीजों की उपलब्धता न होने के कारण कालाबाजारी अब आम हो गई है। बैंकों एवं वित्तीय संस्थाओं ने किसानों को कृषि ऋण की सुविधा कम कर दी है। परिणामस्वरूप कृषि निर्यात एकाएक बुरी तरह गिरा है। देश के कृषि क्षेत्र में गिरावट आई है। कृषि क्षेत्र की बदहाली के ये पूरे हालात मोदी सरकार की छह माह की कहानी को सार्वजनिक तौर पर बयां कर रहे हैं।

लागत पर 50 फीसदी मुनाफा-वादाखिलाफी की दास्तां

वर्ष 2014 के लोकसभा चुनाव में प्रचार के दौरान श्री नरेंद्र मोदी ने कालेधन की वापसी के बाद किसानों को उनकी लागत पर 50 फीसदी मुनाफा देकर फसलों के लाभकारी सुनिश्चित करने की बात पूरे जोर शोर से कही थी। पंजाब के पठानकोट में 24 अप्रैल 2014 की जनसभा में श्री मोदी की घोषणा थी-हम फसलों का न्यूनतम समर्थन मूल्य बीज, पानी, खाद व श्रम की कीमत की गणना में 50 फीसदी मुनाफा जोड़कर करेंगे। (आधार-पीटीआई व यूएनआई की 24 अप्रैल को जारी खबरें)। बाद में मोदी ने यही वायदा देश के हर हिस्से में जाकर दोहराया।

बात यहीं खत्म नहीं हुई। भाजपा ने अपने 2014 के लोकसभा चुनाव में जारी घोषणापत्र के पृष्ठ 44 पर यही वायदा लिखित में दोहराया। यह घोषणापत्र भाजपा की वेबसाइट पर आज भी उपलब्ध है।

दुर्भाग्य की बात ये है कि सत्ता में आते ही श्री नरेंद्र मोदी द्वारा देश की 60 फीसदी से अधिक आबादी के साथ किया गया यह वायदा रद्दी की टोकरी में डाल दिया गया। केंद्र सरकार के इस धोखे और वायदाखिलाफी के चलते देश का किसान आज दोराहे पर खड़ा है। उसके जज़्मों पर नमक छिड़कते हुए मोदी सरकार ने वर्ष 2014-15 में फसलों के न्यूनतम समर्थन मूल्य में नाममात्र की वृद्धि की है। यह वृद्धि 50 रुपये प्रति क्विंटल तक रही, जबकि कांग्रेस शासन के दौरान 2004-2013-14 तक किसानों को उनकी फसलों के लिए अधिकतम समर्थन मूल्य सुनिश्चित किए गए।

दोनों सरकारों के समय में समर्थन मूल्यों के तुलनात्मक आंकड़ों पर एक नजर डालने से ही यह स्थिति खुद ही स्पष्ट हो जाती है।

क्र.	**फसल का नाम**	**कांग्रेस सरकार (2004-05 से 2013-15)**		**मोदी सरकार (2014-15)**	
		न्यूनतम समर्थन मूल्य (प्रति क्विंटल रुपयों में)	**बढ़ोतरी (प्रति क्विंटल रुपयों में)**	**न्यूनतम समर्थन मूल्य (प्रति क्विंटल रुपयों में)**	**बढ़ोतरी (प्रति क्विंटल रुपयों में)**
1.	गेहूं	640 से 1400	760	1400 से 1450	केवल 50 रुपये
2.	चावल (क) साधारण (ख) ग्रेड-ए	 560 से 1310 590 से 1345	 750 755	 1310 से 1360 1345 से 1400	 केवल 50 केवल 55
3.	(क) कपास देशी (मध्यम रेशा) (ख) कपास अमेरिकन (लम्बा रेशा)	1700 से 3700 1960 से 4000	2000 2040	3700 से 3750 4000 से 4050	केवल 50 केवल 50
4.	गन्ना	73.50 से 220 (2014-15) 10.02.2014 को दिया गया	146.50	220 से 230	केवल 10 (2014-15 के लिए)
5.	अरहर	1390 से 4300	2910	4300 से 4350	केवल 50
6.	मूंग	1410 से 4500	3090	4500 से 4600	केवल 100
7.	जौं	540 से 1100	560	1100 से 1150	केवल 50
8.	मक्की	525 से 1310	785	1310	कोई बढ़ोतरी नहीं
9.	बाजरा	515 से 1250	735	1250	कोई बढ़ोतरी नहीं
10.	सोयाबीन पीला सोयाबीन काला	1000 से 2560 900 से 2500	1560 1600	2560 2500	कोई बढ़ोतरी नहीं कोई बढ़ोतरी नहीं
11.	मूंगफली	1500 से 4000	2500	4000	कोई बढ़ोतरी नहीं

बिना समर्थन मूल्य वाली फसलों के दाम भी औंधे मुंह गिरे

पिछले तीन महीनों में बिना न्यूनतम समर्थन मूल्य वाली फसलों मसलन बासमती-1121,1509, कपास-जे 45 हाईब्रीड और रबड़ की कीमतों में भारी गिरावट दर्ज की गई है। पिछले साल की तुलना में बासमती की कीमत 6000-6500 से गिरकर 3200-3300 पर आ टिकी है। पिछले साल बासमती चावल की किस्मों-1121 व 1509 की कीमत जहां 4400-4800 रुपये प्रति क्विंटल थी उनकी बिक्री इस बार 2400-2800 रुपये प्रति क्विंटल रह गई है। कपास की जे-45

हाईब्रीड और जे-35 की कीमतें पिछले साल की 5300-5500 से गिरकर 3800 से 4000 रुपये प्रति क्विंटल रह गई हैं। ये कीमतें सरकार द्वारा निर्धारित समर्थन मूल्य से भी कम हैं। यही कहानी बर्बादी के कगार पर पहुंच चुके रबड़ उत्पादक किसानों की भी है। रबड़ की कीमतें जो पिछले साल 175 से 200 रूपए प्रति क्विंटल थीं वे मौजूदा सत्र में 120 रुपये प्रति क्विंटल रह गई हैं।

सवाल ये उठता है किसानों को दिव्य-स्वपन दिखाकर सत्ता में आई भाजपा कर क्या रही है?

निर्यात में कमी, कृषि क्षेत्र घटा, वृद्धि दर में गिरावट

कांग्रेस सरकार के कार्यकाल के शुरूआती वर्ष 2003-04 में कृषि निर्यात 7.5 बिलियन अमेरिकी डालर था जो 2013-14 में बढ़कर 42.6 बिलियन तक पहुंच गया। उदाहरण के लिए अकेले बासमती चावल का निर्यात कांग्रेस सरकार के दस सालों में 7.71 लाख टन (1993 करोड़) से बढ़कर 37.5 लाख टन (29299.96 करोड़) और कपास का निर्यात 12.11 लाख गांठों से बढ़कर 114 लाख गांठों तक पहुंच गया।

इसके विपरीत मोदी सरकार की उपेक्षा व अकुशलता से गेहूं, चावल व मक्का के निर्यात में 135 लाख टन यानि 29 फीसदी तक की गिरावट आने के आसार हैं।

कृषि मंत्रालय के नवीनतम आंकड़े और बुरी खबर लेकर आए हैं। इन आंकड़ों के मुताबिक, देश के कृषि क्षेत्र में भारी गिरावट दर्ज की गई है। (आधार-पत्र सूचना कार्यालय की 12 दिसंबर को जारी विज्ञप्ति)। इसके मुताबिक, यह तस्वीर उभर कर सामने आई है-

फसल	2013-14 (लाख हैक्टेयर में)	2014-15 (लाख हैक्टेयर में)	कमी (लाख हैक्टेयर में)
रबी	503.66	470.44	33.22
गेहूं	251.32	241.91	9.41
दाल	124.78	111.13	13.65
सरसों	75.33	69.91	5.42

उपरोक्त हालात का परिणाम ये होगा कि कांग्रेस सरकार के एक दशक के शानदार शासन के बाद 2014-15 में कृषि क्षेत्र में नकारात्मक वृद्धि दर्ज होगी।